टिप्पणी

24

राजेंद्र उपाध्याय

ऐसे जीवन की कल्पना कीजिए जिसमें आपको वही करना और सोचना पड़े जो दूसरे कहें, उसी तरह उठना-बैठना पड़े जिस तरह दूसरे कहें तो आपको कैसा लगेगा? कठपुतली का खेल तो आपने देखा ही होगा। दूसरों के वश में रहना यानीऽपराधीनता कठपुतली की नियति है। उसे दूसरा ही संचालित करता है। कठपुतली में प्राण यानी चेतना नहीं होती इसलिए पराधीनता के कारण न तो उसे पीड़ा होती है, न ही वह मुक्त होना चाहती है। लेकिन मनुष्य सदैव स्वतंत्र रहना चाहता है, यह उसका स्वभाव है। यह बात आपने पाठ 'परशुराम के उपदेश' कविता में भी पढ़ी है। यदि मनुष्य अपने इस स्वभाव को भूलकर अपनी विवेक-बुद्धि को त्यागकर वही करे जो दूसरे कहें तो मानवता का विकास कैसे होगा, उसका भविष्य क्या होगा आपने कभी सोचा है?

आइए, एक ऐसी कविता पढ़ते हैं, जिसमें कठपुतली जैसा जीवन व्यतीत करने वाले लोगों पर व्यंग्य करके उनकी आलोचना की गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पराधीन चेतना का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- मनुष्य पर पराधीनता के दुष्प्रभाव के बारे में बता सकेंगे;
- मनुष्य, विशेष रूप से युवा पीढ़ी द्वारा विवेक के उपयोग का महत्त्व समझा सकेंगे;
- स्वतंत्र विकास के लिए विचारों की द ढ़ता और आत्मनिर्भरता के योगदान का उल्लेख कर सकेंगे;
- 'कठपुतली' कविता के महत्त्वपूर्ण स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता की भाषागत विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

मान लीजिए कठपुतली में भी सोचने-विचारने की क्षमता है। इस कल्पना के आधार पर

कठपुतली के पराधीन होने के दुख का वर्णन पाँच पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

24.1 मूलपाठ

आइए, एक बार इस कविता को अच्छी तरह से पढ़ लें:

कठपुतली

हम कठपुतली हैं

पर हम नहीं जानते कि
हम कठपुतली हैं

हर आदमी एक कठपुतली है
हर औरत एक कठपुतली है।

हम जानते हैं कि
हम कठपुतली हैं
फिर भी हम कठपुतली बने रहते हैं
क्योंकि कठपुतली बने रहने में सुविधा है
किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर हम
खुश रहते हैं
क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती

हम कठपुतली हैं
और हमारे पास आए हर आदमी को हम कठपुतली बनाना चाहते हैं
वो भी इसी में अपनी भलाई मानता है
हर आदमी
एक दूसरे के हाथों में
अपनी डोर देकर आज़ाद है

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो–
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

जो कहते हैं– कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे
वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं।
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।
नामालूम तरीके से
कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं बरस-दर-बरस
और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।
एक कठपुतली
हज़ारों कठपुतली तैयार करती है।
कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं।

–राजेंद्र उपाध्याय

24.2 बोध-प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हम जानते हुए भी कठपुतली बने रहते हैं, क्योंकि–

   (क) इसमें सुविधा मानते हैं (ग) स्वतंत्रता हमें अच्छी नहीं लगती

   (ख) यह हमारा स्वभाव है (घ) कठपुतली की तरह हम जड़ हो चुके हैं

2. 'उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है' – किसके बारे में कहा गया है?

   (क) कठपुतलियों के बारे में

   (ख) आज़ादी का नारा लगाने वालों के बारे में

   (ग) कठपुतली बनाने वालों के बारे में

   (घ) कठपुतली का खेल दिखाने वालों के बारे में

3. किन लोगों को अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती?

   (क) स्वतंत्र विचारों के लोगों को (ग) आज़ादी का नारा लगाने वालों को

   (ख) सुविधाजीवी लोगों को (घ) हर आदमी और हर औरत को

4. 'अरे! हम तो कठपुतली थे' – यह किस समय पता चलता है?

   (क) युवावस्था में (ग) मरते समय

   (ख) व द्धावस्था में (घ) वर्षों बाद

टिप्पणी

कठपुतली

हम कठपुतली हैं

पर हम नहीं जानते कि
हम कठपुतली हैं

हर आदमी एक कठपुतली है
हर औरत एक कठपुतली है।

हम जानते हैं कि
हम कठपुतली हैं
फिर भी हम कठपुतली बने रहते हैं
क्योंकि कठपुतली बने रहने में
सुविधा है
किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर
देकर हम
खुश रहते हैं
क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं
बनानी पड़ती

24.3 आइए समझें

अंश - 1

समस्त प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा है जो अपने जीवन की समीक्षा करता है अर्थात् अपने गुण-दोषों का विवेचन करता है। इस कविता के आरंभ में कवि 'हम' शब्द का प्रयोग करता है। वह इसके माध्यम से मनुष्य के कठपुतली बन जाने यानी उसके पराधीन हो जाने की प्रव त्ति की ओर संकेत करता है। कवि इसमें स्वयं को भी शामिल करता है। वह कहना चाहता है कि पराधीन जीवन जीने वाला कोई भी हो सकता है – मैं भी, आप भी। स्पष्ट है कि वह इस संदर्भ में आत्मालोचन करता है। जब कोई किसी दोष को दूसरों के साथ-साथ अपने भीतर भी देखता है और उसका विरोध करता है तो वह आत्मालोचना होती है। आत्मालोचना व्यंग्य का आदर्श रूप है।

चित्र 24.1

अपने अस्तित्व और महत्त्व को भूलकर दूसरों के नियंत्रण में हो जाने की प्रव त्ति को हम अपने परिवार, समाज और देश से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक देख सकते हैं। व्यक्ति ही कठपुतली नहीं बनता एक देश भी दूसरे देश की कठपुतली बन सकता है। जिस तरह स्वाधीनता केवल आर्थिक तथा राजनीतिक ही नहीं होती, मानसिक भी होती है उसी तरह पराधीनता भी मानसिक हो सकती है। पराधीन चेतना व्यक्ति, समाज और देश के विकास को अवरुद्ध करती है। एक अनुभव तो हम सब लोगों के बहुत निकट का ही है। आप देखते हैं कि बहुत से परिवारों में बड़े अपने से छोटों को सदैव अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। वे छोटों को उनकी क्षमता और इच्छा के अनुसार जीवन की सही राह नहीं चुनने देते, बल्कि अपनी इच्छाओं को उन पर थोपते हैं। परिणामस्वरूप किशोर तथा युवा पीढ़ी अनेक प्रकार के मानसिक दबावों में जीती है। इसके अनेक दुष्परिणाम होते हैं जिनके विषय में आप जानते ही हैं। क्या आप बता सकते हैं कि किशोर वर्ग के मानसिक दबाव क्या-क्या हैं? कोई पाँच का यहाँ उल्लेख कीजिए:

....

....

....

इतना तो आप समझ ही गए होंगे कि इस कविता में कठपुतली पराधीन व्यक्तित्व का प्रतीक है। कठपुतली का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। वह खेल दिखाने वाले की इच्छा के अनुसार कार्य करती है। यह खेल सभी को अच्छा लगता है। लेकिन यदि मनुष्य ही कठपुतली बन जाए तो? क्या यह अच्छा होगा? दुर्भाग्य से इधर यह प्रव त्ति हम अपने आस-पास अक्सर देखते हैं। बहुत से व्यक्ति आजीवन दूसरों के प्रभाव में कार्य करते हैं। यह स्थिति इतनी बढ़ रही है कि कवि को पुनः कहना पड़ता है– *'हर आदमी एक कठपुतली है, हर औरत एक कठपुतली है।'* हमारे समाज में लोगों को कठपुतली के रूप में रहते-रहते ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे यह भूल जाते हैं कि वे पराधीन हैं। यहाँ एक अर्थ और भी है, वह यह कि अपनी मानसिक परतंत्रता का बोध ही समाप्त हो जाता है। यदि जीवन में कभी-कभार यह अहसास होता भी है कि हम कठपुतली हैं तो वह तुरंत ही समाप्त हो जाता है और हम कठपुतली ही बने रहने में अपना भला समझते हैं; क्यों? क्योंकि सुविधाएँ, उनसे प्राप्त खुशियाँ और जीवन जीने के बने-बनाए रास्ते तभी उपलब्ध हो सकते हैं, जब हम दूसरों का कहा करते रहें, अपनी डोर दूसरों के हाथों में दे दें। यह हम सबके जीवन का अनुभव है कि हममें से बहुत से लोगों का जीवन दूसरों का कहा करने में ही बीत जाता है, चाहे वह गलत हो, चाहे सही। ऐसा कभी भय के कारण किया जाता है, कभी भौतिक सुखों के लालच में। कभी नौकरी बचाने के लिए किया जाता है, कभी केवल इसलिए कि हमें बड़ों के आदेश का पालन करना है। कुल मिलाकर ऐसा करने के पीछे हमारा विवेक नहीं कोई भय, लोभ या जीवन की रूढ़ियाँ ही होती हैं।

अब तक आपके सामने यह स्पष्ट हो गया होगा कि अस्तित्व और उसकी स्वतंत्रता एक ऐसा मूल्य है जिसकी प्राप्ति के लिए बहुत-सी सुविधाएँ, खुशियाँ और बने-बनाए रास्तों की उपलब्धता को छोड़ना पड़ता है। अपनी राह खुद बनाने के लिए संघर्ष तो करना ही पड़ेगा। राह या डगर का अर्थ है जीवन जीने का अपना तरीका। कवि यह कहना चाहता है कि हम अपने विवेक के आधार पर यह चुनाव करें कि हमारे जीवन की सही दिशा क्या होगी? याद कीजिए महान् लोगों के जीवन-संघर्ष को। यदि वे भी वही करते जो दूसरों ने किया यानी बनी-बनाई राहों पर चलते तो क्या हम उन्हें महान व्यक्तित्व कहते? झाँसी की रानी, भगत सिंह, चंद्रश्शेखर आज़ाद, गांधी, नेहरु आदि को क्या किसी सुविधा की कमी होती, यदि वे अंग्रेज़ों की कठपुतलियाँ बन जाते? कल्पना चावला, सानिया मिर्ज़ा जैसी लड़कियाँ यदि बनी रूढ़ियों पर चलतीं तो क्या उस स्थान पर पहुँच सकती थीं जहाँ वे पहुँचीं? स्पष्ट है कि बने-बनाए रास्तों पर चलने वाले लोग सामान्य होते हैं और इन रास्तों को छोड़कर नई राह बनाने वाले महान। कहा भी गया है –*'छाँड़ि लीक तीनों चलें सायर, सिंह, सपूत।'*

पाठगत प्रश्न 24.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में लिखिए–

1. 'कठपुतली' किसका प्रतीक है?
2. 'हम कठपुतली हैं' कविता की पंक्ति में 'हम' से कवि का क्या तात्पर्य है?

टिप्पणी

3. 'दूसरे के हाथों में अपनी डोर देने' का क्या अर्थ है?
4. अपनी डगर खुद बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता है?

अंश-2

हम कठपुतली हैं
और अपने पास आए हर आदमी को
हम कठपुतली बनाना चाहते हैं
वो भी इसी में अपनी भलाई मानता है
हर आदमी
एक दूसरे के हाथों में
अपनी डोर देकर आज़ाद है

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो—
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

कवि आगे कहता है कि कठपुतली बने हुए व्यक्ति के संपर्क में जो भी आता है उसे वह कठपुतली बनाना चाहता है। यानी न वह खुद स्वाधीन है और न ही किसी दूसरे को स्वाधीन देखना चाहता है। इस तरह लोगों को कठपुतली बनाना एक संक्रामक (फैलनेवाले) रोग के समान है। कठपुतली बनना मनुष्य का एक दोष है, यह वह जानता है। इसे समाप्त करने के दो तरीके हो सकते हैं। या तो वह स्वयं से लड़े और लालच को छोड़कर बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इस बुराई को छोड़ दे। या जो इस बुराई से ग्रस्त नहीं हैं उन्हें भी अपने समान कठपुतली बना दे। अपने दोषों को छिपाने का दूसरा तरीका एक और सरल उपाय बन चुका है – 'बुरा मैं ही नहीं हूँ, सभी बुरे हैं' यह सोचकर व्यक्ति अपने को ठीक ठहराने का प्रयास करता है। दूसरी ओर जिस आदमी को कठपुतली बनाया जाता है वह भी इसी में अपनी भलाई मानता है, क्योंकि उसे लगता है कि कठपुतली बनकर जितनी आसानी से सुविधाएँ और बने-बनाए रास्ते प्राप्त हो जाते हैं, उतनी आसानी से स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाए रखकर प्राप्त नहीं हो सकते। आप यह तो समझ ही गए होंगे कि यहाँ पर भलाई का क्या अर्थ है। जी हाँ, अपने आपको दूसरों के हाथों में सौंपने के बाद जो सुविधाएँ मिलती हैं, वे ही भलाई कही गई हैं। इस तरह 'भलाई' शब्द में व्यंग्य निहित है। इसके बाद की तीन पंक्तियों में एक विरोधाभासी अभिव्यक्ति की गई है। विरोधाभास वहाँ होता है जहाँ दो बातों में विरोध दिखाई पड़े, लेकिन वास्तव में न हो। कवि कहता है कि हर आदमी एक-दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर आज़ाद है। अगर कोई अपनी डोर दूसरे के हाथों में दे दे तो वह आज़ाद कैसे हो सकता है? वस्तुतः यहाँ आज़ादी से तात्पर्य है—श्रम और संघर्ष न करने की निश्चिंतता। स्वतंत्रता के बदले जो चीज़ें मिल रही हैं वे भी इस आज़ादी के अर्थ में शामिल हैं। स्पष्ट है कि यह आज़ादी वास्तविक नहीं, बनावटी हैः पशुओं जैसी है। इस तरह के आज़ाद रहने वाले लोग वास्तविक आज़ादी के महत्त्व को नहीं समझते। वे आज़ादी का दिखावा करने के लिए उसके नारे लगाते हैं, क्योंकि दूसरे उनसे आज़ादी के नारे लगाने के लिए कहते हैं। क्या वे सचमुच आज़ादी का अर्थ समझते हैं? स्वयं आज़ाद हैं? आपने ठीक कहा—नहीं।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित स्थिति को ध्यानपूर्वक पढ़िएः

मान लीजिए आप बहुत अच्छा गाना गाते हैं और जीवन में एक स्थापित संगीतकार बनना चाहते हैं परंतु आपके पिताजी आपको सलाह देते हैं कि यदि तुम आगे चलकर अच्छे संगीतकार बनना चाहते हो, ज़रूर बनो। पर मैं आगे तुम्हारे लिए कोई खर्चा नहीं उठा पाऊँगा क्योंकि आजकल कपड़े की दुकान पर धंधा बहुत अच्छा नहीं चल रहा। अभी

तुम्हारे छोटे भाई पढ़ रहे हैं और बड़ी बहन की शादी करनी हैं। पर हाँ! तुम मेरे साथ व्यवसाय में हाथ लगा सको तो अच्छा है। उक्त स्थिति में आप होते तब क्या करते?

(क) पिताजी की बात मान लेते और उनके साथ व्यवसाय में हाथ बँटाते।

(ख) तनावों से जूझते। पिताजी की बातों का सम्मान करते हुए, आधा समय अपने संगीत का अभ्यास कर अपना सपना पूरा करते।

(ग) भावनाओं से जूझते हुए स्वयं कुछ बनने का निर्णय लेते। घर छोड़कर अलग कहीं रहते...अपने हिसाब से समय का प्रबंधन करते, कहीं नौकरी करते और अपने सपनों को पूरा करते।

(घ) स्वयं को पिताजी की स्थिति में रखकर पूरी स्थिति का विश्लेषण करेंगे और सोचेंगे कि उन्होंने जो कहा ठीक कहा, मुझे उन्होंने बड़ा कर दिया, पढ़ा-लिखा दिया, अब मुझे ऐसा निर्णय लेना होगा जिससे उनके मन को ठेस न पहुँचे।

अब आप स्वयं को आँक सकते हैं यदि आपने (क) पर निशान लगाया है तब बड़ों की भावनाओं का सम्मान करना, आपका स्वभाव है। यदि आप (ख) पर निशान लगाते हैं, तब आपमें तनावों से जूझने, संतुलित निर्णय लेने, बड़ों का सम्मान करने, स जनात्मक चिंतन करने, समस्याओं का समाधान करने जैसे कई गुण हैं।

अब यदि आप (ग) विकल्प का चयन करते हैं, तब निश्चित रूप से आपमें तनावों से जूझने की क्षमता, स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता, समय-प्रबंधन, सकारात्मक सोच, चुनौतियों का सामना करने का साहस और स्वजागरूकता का गुण है। और यदि आप अंतिम विकल्प (घ) का चयन करते हैं, तब आपमें तद्नुभूति यानी कि अन्य व्यक्ति के द ष्टिकोण से स्थितियों को जाँचने-परखने की क्षमता की आधिक्य है। जीवन में स्थितियों से समझौता करना, सामंजस्य स्थापित करना जैसे कौशल आपके व्यक्तित्व के अंग हैं। इसके लिए दी गई परिस्थितियों में प्रश्न यह है कि आप अपने सपने कैसे पूरे कर पाएँगे? आपको अपने उत्तरों के अनुसार ही व्यक्तित्व का विकास करना होगा। जीवन में ऐसी अनेक परिस्थतियाँ आपके आगे आकर खड़ी होंगी तब जब-जब जैसे-जैसे आप निर्णय लेंगे, वैसे ही परिणाम आपके सामने आएँगे।

आइए कविता को आगे बढ़ाते हैं– कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आज़ादी का ढोंग करते हुए ज़ोर-शोर से यह घोषणा करते हैं कि वे कठपुतली बनाए जाने के इस खेल में शामिल नहीं होंगे। कठपुतली नहीं बनेंगे यानी अपनी स्वतंत्रता दूसरे को नहीं सौंपेंगे। वे लोग यह प्रदर्शन इसलिए करते हैं कि कठपुतली बनाकर सुविधाएँ देने वाले लोगों का ध्यान उनकी तरफ़ जाए। दूसरों को पता भी नहीं चलता और वे लोग कठपुतली बना दिए जाते हैं। स्पष्ट है कि दिखावा करने वाले लोग दूसरों को अपनी आज़ादी सबसे पहले सौंपते हैं। इस तरह कठपुतली के रूप में मनुष्य अपना पूरा जीवन गुज़ार देता है। मरते समय वह यह सोचता है कि *'अरे! हम तो कठपुतली थे।'* जानते हैं यह वाक्य क्यों कहा गया है? कहा जाता है जीवन के अंतिम पड़ाव में मनुष्य अपने जीवन की समीक्षा करता है। यानी वह देखता है कि उसने अपना जीवन किस

टिप्पणी

जो कहते हैं– कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे
वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं।
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।
नामालूम तरीके से
कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं
बरस-दर-बरस
और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

तरह बिताया। उसकी कोई सार्थकता रही कि नहीं। वह दूसरे प्राणियों की तरह बनी-बनाई लीकों पर ही चलता रहा, कि नए रास्ते भी खोजे। जीवन के ऐसे क्षण में कठपुतली बनकर जीने वालों को अनुभव होता है कि उनका जीवन निरर्थक ही रहा, उन्होंने मानवता के विकास में कोई योगदान नहीं दिया। कवि यहाँ पर संदेश देता है कि हमें अपने जीवन को संतोषजनक और सार्थक बनाने के लिए सही-गलत का फ़ैसला बुद्धि के अनुसार करना चाहिए, इस आधार पर जीवन का मार्ग स्वयं तैयार करना चाहिए। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। अंत में हम संतुष्ट भी होंगे कि हम कठपुतली बनकर नहीं जिए।

पाठगत प्रश्न 24.2

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही वाक्यों के आगे सही (√) और गलत वाक्यों के आगे गलत (X) का निशान लगाइए–

(क) परिश्रम तथा संघर्ष से बचने वाले लोग ही कठपुतली बनते हैं। ( )

(ख) कठपुतली बने लोग आज़ादी का वास्तविक महत्त्व नहीं समझते। ( )

(ग) जीवन की सार्थकता मनुष्य के कठपुतली बने रहने में ही संतोष प्रदान करती है। ( )

(घ) आज़ादी का नारा लगाने वाले सभी लोग स्वाधीन होते हैं। ( )

(ङ) नए मार्ग बनाकर हम मानवता के विकास में योगदान देते हैं। ( )

(च) विवेक सही-गलत का फैसला करने में रुकावट डालता है। ( )

अंश - 3

कविता के दूसरे अंश में आए 'आज़ादी'शब्द को इन अंतिम पंक्तियों में अधिक स्पष्ट करते हुए कवि कहता हैं कि कठपुतली बन चुके मनुष्य इस तरह से आज़ाद हैं कि वे अपने विवेक के अनुसार कार्य नहीं करते, बल्कि कोई और ही व्यक्ति उन्हें वश में किए हुए है। ये मनुष्य कठपुतली के समान सदैव दूसरों के अनुसार कार्य करते हैं। आप समझ ही गए होंगे कि इसे आज़ादी नहीं, पराधीनता कहते हैं। यहाँ कवि उन लोगों की आलोचना करता है, जो स्वतंत्र होने का आडंबर करते हैं, पर हैं वस्तुतः परवश। मानसिक रूप से पराधीन होना बहुत तेज़ी से फैलने वाली सामाजिक बुराई है, क्योंकि एक कठपुतली मनुष्य बहुत से कठपुतली मनुष्य तैयार करता है। क्यों? यह हम समझ ही चुके हैं।

अंत में कवि वास्तविक कठपुतली और कठपुतली बने मनुष्य के बीच अंतर करता है कि मनुष्य रूपी कठपुतली, वास्तविक कठपुतली से भी ज़्यादा पराधीन है, क्योंकि खेल दिखाने के लिए कठपुतली के केवल हाथ-पैर ही बाँधे जाते हैं, जबकि मनुष्य कठपुतली के आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे होते हैं। कहने का आशय यह है कि पराधीन व्यक्ति वही देखता, सुनता और कहता है जो दूसरा चाहता है। आँख, कान आदि हमारी

ज्ञानेंद्रियाँ हैं। प्रकृति ने ये मनुष्य को इसलिए दी हैं कि वह इनके द्वारा स्वयं ज्ञान प्राप्त करे और उसका उपयोग अपनी बुद्धि अपने विवेक से करे। लेकिन हम देखते हैं कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो न तो अपनी ज्ञानेंद्रियों का उचित और उपयुक्त उपयोग करते हैं और न ही अपनी बुद्धि का। वे दूसरों की कही गई प्रत्येक बात को, चाहे वह गलत ही क्यों न हो आँखें मूँदकर मान लेते हैं। इस तरह वे प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति का सही उपयोग नहीं करते और निरर्थक जीवन बिताते हैं। दरअसल कवि हमारे समक्ष एक प्रश्न प्रस्तुत कर देता है कि क्या ऐसे लोगों और कठपुतलियों के जीवन में कोई अंतर है?

टिप्पणी

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।
एक कठपुतली
हज़ारों कठपुतली तैयार करती है।
कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बंधे हैं।

पाठगत प्रश्न 24.3

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'ऐसे हम आज़ाद हैं' पंक्ति में कवि–
   (क) अपनी प्रशंसा कर रहा है
   (ख) आलोचना कर रहा है
   (ग) आज़ादी क्या है– यह बता रहा है
   (घ) अपने आज़ाद होने की बात कह रहा है।
2. प्राकृतिक संपदाओं का सही उपयोग हम कैसे कर सकते हैं?
   (क) अपनी डोर बड़ों के हाथ में देकर
   (ख) अपने विवेक का उपयोग करके
   (ग) दूसरों की बातों का पालन करके
   (घ) अपनी डोर छोटों के हाथ में देकर
3. 'आँख, नाक, कान, मुँह सब बँधे' होने का तात्पर्य है –
   (क) किसी के द्वारा कैद कर लिया जाना
   (ख) ज्ञानेंद्रियों द्वारा कार्य बंद कर देना
   (ग) पराधीन होकर सोचना-विचारना-महसूस करना
   (घ) कठपुतली के समान हो जाना

अंश - 4

24.4 भाषा तथा शिल्प सौंदर्य

अब तक आप अनेक कविताएँ पढ़ चुके हैं। लेकिन भाषा की द ष्टि से इस कविता में आपको क्या विशिष्टता या अलग बात नज़र आई? जी हाँ, इससे पहले आपने जितनी

भी कविताएँ पढ़ीं उनमें कुछ शब्द ऐसे आए होंगे जिनका अर्थ देखने के लिए कोश का सहारा लेना पड़ा होगा। क्या इस कविता में ऐसा एक भी शब्द ढूँढ़ा जा सकता है जो कठिन हो? नहीं। इसकी भाषा पूरी तरह से सामान्य बोलचाल की भाषा है। इसलिए शब्दार्थ के स्तर पर इसे समझने में कठिनाई नहीं होती। लेकिन यदि आप इसकी गहराई में उतरना चाहते हैं तो एक काम तो करना ही होगा और वह है इस कविता में आए प्रतीकों का अर्थ समझना। कविता में प्रतीकों के रूप में आए शब्द अपना अर्थ छोड़कर दूसरा अर्थ देते हैं। इस दूसरे अर्थ को जानकर ही कविता की गंभीरता को समझा जा सकता है। जैसे 'कठपुतली' शब्द को ही लें। क्या इस कविता में केवल खेल दिखाने के लिए उपयोग की जाने वाली कठपुतली की ही बात की जा रही है? जी नहीं, कवि तो मनुष्य के रूप में कठपुतली जैसा जीवन बिताने वाले लोगों की ओर संकेत कर रहा है। इसी प्रकार डगर, डोर, आज़ाद, भलाई शब्द भी यहाँ प्रतीक के रूप में आए हैं। इनके अर्थ हम पहले ही जान चुके हैं।

'हम सब कठपुतली हैं' या *'हमारे आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं'* जैसे स्थलों पर कवि लाक्षणिक भाषा का भी प्रयोग करता है। लाक्षणिकता वहाँ होती है, जहाँ बात को सीधे-सादे ढंग से न कहकर उसका संकेत मात्र किया जाता है या जैसे हमारे सभी मुहावरों में लाक्षणिकता होती है। मनुष्य कठपुतली नहीं हो सकता बल्कि कठपुतली जैसा पराधीन जीवन व्यतीत करता है, इसलिए उसके लिए इन अभिव्यक्तियों का उपयोग किया गया है।

इस कविता में कवि ने व्यंग्य-शैली का भी उपयोग किया है। हम अनुभव करते हैं कि कवि पराधीन व्यक्तित्व वालों के विरोध में यह कविता लिख रहा है। व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई रचनाओं में प्रायः समाज में फैली बुराइयों पर शब्दों के तीखे बाण चला कर उन्हें समाज की द ष्टि में लाया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि लेखक बुराई का समर्थक है या उसकी स्थापना करना चाहता है। बल्कि वह वर्णन करके व्यंग्य-रूप में इसका विरोध करता है। समाज में गुण-दोष दोनों होते हैं। लेखक इन दोनों का चित्रण कर सकता है। हम भी जब किसी दोष की बात करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से यह चाहते हैं कि उस दोष का अंत होना चाहिए। इस कविता में भी कवि चाहता है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व, अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाज और देश के विकास के लिए बनाए रखे। जो लोग ऐसा नहीं करते उन पर कवि व्यंग्य यानी शब्दों की चोट करता है, जैसे –

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो–
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

* * *

जो कहते हैं कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे। वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।

* * *

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।

पाठगत प्रश्न 24.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कठपुतली कविता की भाषा

   (क) संस्कृतनिष्ठ है (ग) अरबी-फ़ारसी शब्दों से युक्त है

   (ख) सामान्य बोलचाल की है (घ) कठिन, जटिल और उलझी हुई है

2. लाक्षणिकता में बात को–

   (क) संकेत रूप में कहा जाता है (ग) जटिल शब्दों में कहा जाता है

   (ख) सीधे कह दिया जाता है (घ) आसान शब्दों में कहा जाता है

3. 'हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं,' पंक्ति में निम्नलिखित में से भाषा का कौन-सा गुण है?

   (क) अभिधात्मकता (ग) प्रतीकात्मकता

   (ख) मुहावरों का प्रयोग (घ) लाक्षणिकता

24.5 आपने क्या सीखा

- 'कठपुतली' कविता में कवि ने बढ़ती हुई पराधीनता की प्रव त्ति पर चिंता व्यक्त की है।
- पराधीनता मनुष्य को, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाती है।
- छोटी-छोटी सुविधाओं तथा खुशियों के लिए मनुष्य अपनी स्वतंत्रता दूसरों को सौंप देता है, जो गलत है।
- अपने अस्तित्व और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए परिश्रम और संघर्ष को अपनाना चाहिए। महान व्यक्तित्व स्वतंत्रता, संघर्ष और परिश्रम के आधार पर जीवन के नए मार्ग तैयार करते हैं। यही सार्थक जीवन है।
- आज़ादी का दिखावा न करके सच्ची आज़ादी का महत्त्व समझना चाहिए।
- प्रकृति ने हमें ज्ञान तथा विवेक के स्रोत इसलिए दिए हैं कि हम सही-गलत रास्तों का चुनाव स्वयं कर सकें, अपने निर्णय स्वयं ले सकें, विचारों में द ढ़ हो सकें और आत्मनिर्भर बन सकें।

- 'कठपुतली' कविता की भाषा आम बोलचाल की है। इसमें प्रतीकात्मकता तथा लाक्षणिकता है।
- इस कविता में कवि ने व्यंग्य-शैली का उपयोग किया है।

24.6 योग्यता-विस्तार

(क) कवि परिचय

'कठपुतली' कविता के लेखक राजेंद्र उपाध्याय का जन्म 20 जून, 1958 को सैलाना, ज़िला रतलाम (म.प्र.) में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा हिमाचल प्रदेश और कोलकाता में हुई। अब तक उनके पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम हैं – *'सिर्फ़ पेड़ ही नहीं कटते हैं', 'खिड़की के टूटे हुए शीशे में' 'लोग जानते हैं' 'मोबाइल पर ईश्वर' और 'पानी के कई नाम'।* राजेंद्र उपाध्याय की कुछ कविताओं का अनुवाद गुजराती, सिंधी, अंग्रेज़ी, मलयालम, पंजाबी और राजस्थानी में भी हुआ है। उन्होंने कविताओं के अतिरिक्त कई गद्य-विधाओं, जैसे–कहानी, आलोचना, भेंटवार्ता, डायरी आदि में भी लेखन-कार्य किया है, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित है। सन् 2006 में डायरी लेखन में पुरस्कृत हुए।

भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता के संपादन-विभाग; पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली तथा भारत सरकार के प्रकाशन विभाग में कार्य करने के बाद अब आकाशवाणी, नई दिल्ली में हिंदी समाचार-संपादक हैं।

(ख) आइए, अब प्रसिद्ध कवि विनय विश्वास की कविता 'केंचुए' पढ़ते हैं, जिसमें व्यक्तित्वहीनता को ही कविता का विषय बनाया गया है:

केंचुए

पुरानी दिल्ली की पेचीदा गलियों की तरह
न जाने कहाँ से कहाँ निकलते
केंचुओं से मिल जाते हैं
केंचुए

पहले तो बारिश का मौसम ही
उनका होता था
कीचड़ में एक भी जगह नहीं बची
उनके रेंगने के निशानों से
एक भी पल नहीं राजधानी में जब वे बरस न रहे हों
ईमान के सर पे
मुश्किलों की तरह

एक था जिसे मैंने आदमी समझा
बात करते चला उसके साथ थोड़ी दूर
पर कीचड़ देखते ही वह पसर गया

रेंगने लगा चरणों में लोटता
नाक उसकी थी ही नहीं जो इत्र-सड़े कीचड़ से लड़ती

बच्चे उसे देख तालियाँ बजाने लगे
मैंने देखा उनकी आँखों में
उसे
आदर्श की तरह खड़े होते।

24.7 पाठांत प्रश्न

1. बढ़ती हुई पराधीनता पर अपने विचार लिखिए।
2. मनुष्य के कठपुतली बन जाने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं, तर्क सहित उल्लेख कीजिए।
3. कुछ लोगों के महान बनने में स्वाधीन चेतना का भी महत्त्व रहा है – इस विषय पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. कठपुतली बना हुआ मनुष्य दूसरों को भी कठपुतली क्यों बनाना चाहता है?
5. कठपुतली बनकर जीनेवालों का जीवन निरर्थक ही बीत जाता है – इस विषय पर अपने विचार लिखिए।
6. कभी-कभी परिवार का दबाव भी व्यक्ति को पराधीन बनाता है – इस विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. 'युवा पीढ़ी की आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के लिए स्वाधीन चेतना का होना बहुत आवश्यक है', इस कथन का विश्लेषण कीजिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव स्पष्ट कीजिए–

   (क) किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर हम खुश रहते हैं।
   क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती।

   (ख) आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो –
   उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

   (ग) कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं बरस-दर-बरस
   और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

   (घ) कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
   हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं।
9. 'कठपुतली' कविता की भाषागत विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।
10. कहते हैं 'श्री कृष्ण ने अपनी छोटी उँगली पर सभी को नचाया।' क्या आप स्वयं भी किसी की छोटी उँगली पर नाचते हैं और क्यों? और यह भी बताइए कि आप किसे नचाते हैं और क्यों?

24.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्नों के उत्तर

1. (क)   2. (ख)   3. (ख)   4. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1 1. पराधीन व्यक्तित्व का

2. हम सभी वह कोई भी हो सकता है—मैं भी, आप भी

3. दूसरे के नियंत्रण या वश में होना

4. परिश्रम और संघर्ष की

24.2 (क) (√)   (ख) (√)   (ग) (X)   (घ) (X)   (ङ) (√)   (च) (X)

24.3 1. (ख)   2. (ख)   3. (ग)

24.4 1. (ख)   2. (क)   3. (घ)